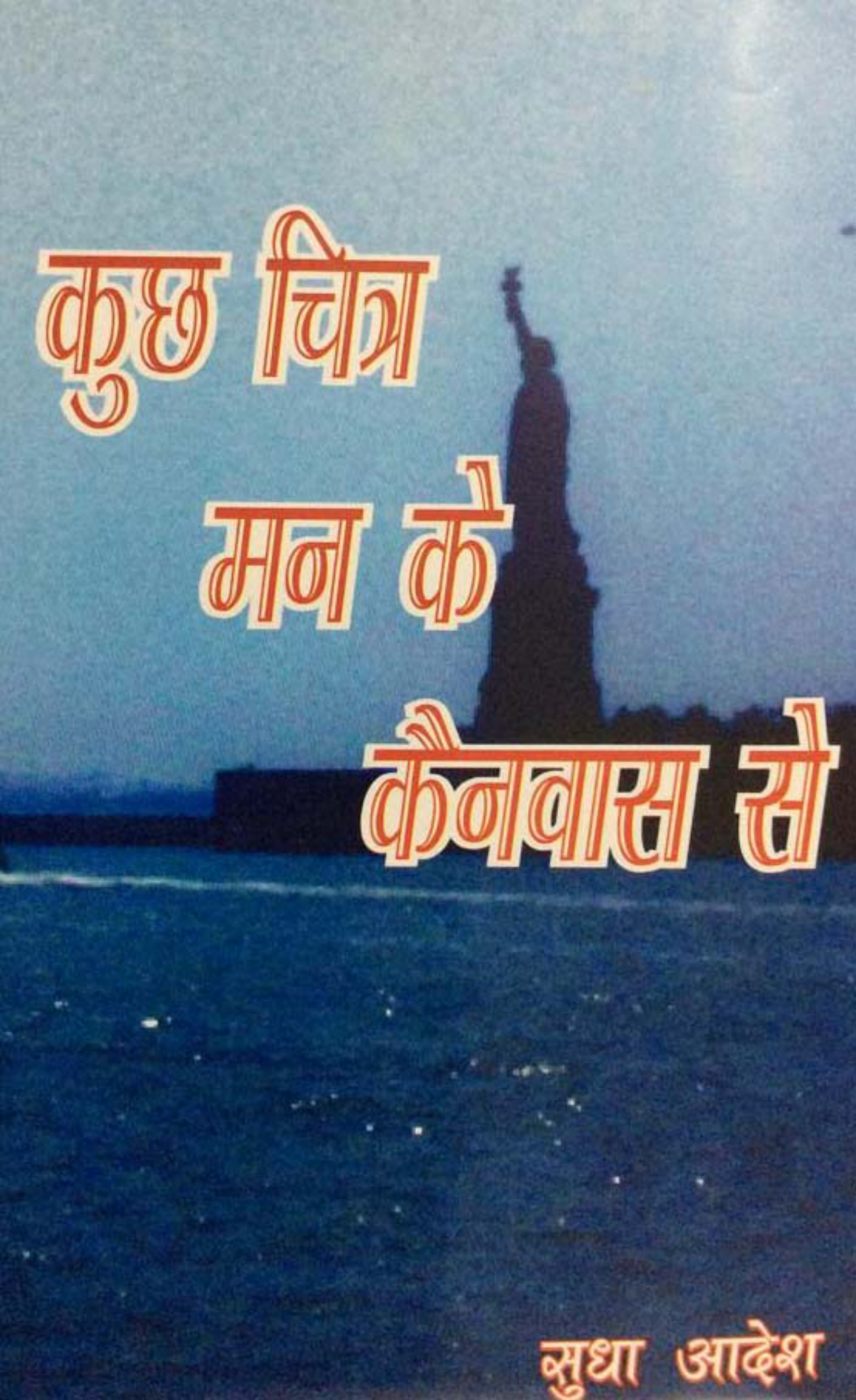
कुछ चित्र
मन के
कैनवास से
सुधा आदेश

कुछ चित्र
मन के कैनवास से

(यात्रा वृ ांत)

➠ सुधा आदेश

Kuch Chitra Mann Ke Kenvas Se
By- Sudha Adesh

रचनाकार	:	सुधा आदेश ©
कृति नाम	:	कुछ चित्र मन के कैनवास से
प्रकाशक	:	मनसा पब्लिकेशन्स
मुद्रक	:	ट्रेडमैक्स प्रिंटर्स 8, प्रताप कॉम्प्लेक्स, अपोजिट लेखराज मार्केट–2, फैजाबाद रोड, लखनऊ–16
कम्प्यूटर डिजाइनिंग	:	दुर्गा प्रजापति
संस्करण	:	प्रथम
वर्ष	:	2014
मूल्य	:	₹ 125/–
ISBN	:	**978-93-81377-55-0**

प्रकाशक
मनसा पब्लिकेशन्स
2/256, विराम खण्ड, गोमती नगर, लखनऊ–226010
Email- manasapublications2007@rediffmail.com
www.manasapublications.org

समर्पण

समर्पित...
उन सभी परिचित अपरिचतों वको
जो मेरी इस याात्राा में
सहयोगी बने...

आभार...
विशे ा रूप से
इन दो परिवारों वका...
मेरी छोटी बहन प्रभा एवं
उसवका परिवार

हमारे अभिन्न
मित्रा हरिबंधु एवं
आरती महापात्राा
वकी पुत्राी संगीता
सारंगी एवं
उसवका परिवार

अपनी बात

मैंने अनेकों यात्रायें की थीं पर खुशी और गम मिश्रित यह यात्रा अभूतपूर्व थी... गम इसलिये क्योंकि महीने भर पूर्व अचानक ही हमें अपनी माँ के घुटने का प्रत्यारोपण करवाना पड़ा यद्यपि परेशानी तो माँ को बहुत दिनों से थी पर एक दिन उन्हें ऐसा लगा कि वह जमीन पर पैर ही नहीं रख पा रही हैं, उन्हें एक पैर के सहारे ही लगभग घिसट-घिसट कर चलना पड़ रहा है, डाक्टर को दिखाया तो उन्होंने घुटना प्रत्यारोपण की सलाह दी, उनका कहना था घुटने की हड्डी में उपस्थित द्रव्य सूखने के कारण ज्वाइंट जम गया है जिसके कारण पैर मुड़ नहीं पा रहा है अतः आपरेशन करवाना आवश्यक है यद्यपि मेरे पापा माँ की वृद्धावस्था के कारण इस आपरेशन के लिये मन से तैयार नहीं थे पर मजबूरी के कारण उन्हें इस आपरेशन के लिये तैयार होना पड़ा... यह आपरेशन हम पाँच भाई बहनों ने योजनाबद्ध रूप से करवाया था तथा सबने उनकी सेवा के लिये अपना समय ऐसा बाँट लिया था जिससे कि किसी पर भी ज्यादा भार न पड़े तथा उनकी पूरी देखभाल भी हो सके... आपरेशन के लगभग एक महीने पश्चात् ही मुझे सात समुंदर पार की इस यात्रा के लिये निकलना था जिसकी योजना महीनों पूर्व ही बना ली गई थी...।

कहते हैं इंसान के अपने वश में कुछ नहीं है, इंसान सोचता कुछ है तथा होता कुछ है... माँ का आपरेशन हुए अभी कुछ ही दिन हुए थे कि उनकी हालत बिगड़ने लगी तथा एक बार फिर उन्हें आकस्मिक सेवा विभाग में ले जाना पड़ा । पापा जो मन से उनके इस आपरेशन के लिये तैयार नहीं थे, उनकी हालत देखकर घबड़ा गये, उन्हें अचानक ऐसा अटैक आया जिससे कि वह चेतना शून्य होने लगे, उनके स्वास्थ्य में गिरावट आते देख, अटैन्डेट के बिस्तर पर उन्हें लिटा दिया तथा डाक्टर को बुलाया... चैकअप हुआ... ब्लड प्रेशर अवश्य लो था पर ई.सी.जी. वगैरह सब ठीक था किन्तु उसके बावजूद वह उठ नहीं पा रहे थे यहाँ तक कि उनके हाथ पैर भी अकड़ने लगे थे... उनके भी सब टेस्ट चल रहे थे... रिपोर्ट में कोई गड़बड़ी न आने के कारण डाक्टरों को भी समझ में नहीं आ रहा था कि उन्हें हुआ क्या है... दोनों के बीमार होने के कारण उस समय उपस्थित मेरी दोनों बहनें प्रभा, रंजना और भाई राकेश तथा भाभी वंदना परेशान हो गये, उन्होंने मुझे तथा भाई राजेश जो मुंबई में कार्यरत था, को सारी स्थिति से अवगत कराया तथा हमें अपने तयशुदा कार्यक्रम से पहले आना पड़ा... भाभी आरती भी जो कलकत्ता में कार्यरत थी, आ गई ।

हमारी सारी योजना धरी की धरी रह गई... माँ भी अपनी कमजोरी से उबर नहीं पा रही थी और न ही पापा में कुछ सुधार के लक्षण नजर आ रहे थे, इधर मेरा भी जाने का समय नजदीक आने लगा था... आखिर माँ पापा में थोड़ा सुधार होने पर उन्हें डिस्चार्ज कर दिया गया... मेरी उहापोह समाप्त नहीं हो पा रही थी, बहुत ही पेशोपेश में थी, एक हफ्ते बाद ही हमारी फ्लाइट थी... माँ ने समझाया तुम जाओ कुछ नहीं होगा तुम्हारे पापा और मुझे पर उन्हें यूँ इस हालत में छोड़कर जाना मेरे लिये कर्तव्यविमुख होने जैसा था पर जाना तो था ही, एक लड़की कब तक मायके में रह सकती है... मन को बस एक तसल्ली थी कि वे भाई राकेश एवं वंदना भाभी के पास हैं, वहाँ उनकी उचित रूप से देख-रेख हो सकेगी... कहते हैं हर खुशी पंख लगाकर आती है पर इस बार खुशी आई पर उसके पंख कटे हुए थे...।

हमारा अमेरिका जाने का कार्यक्रम महीनों पूर्व बन चुका था । इसलिये जाना ही था क्योंकि ऐसे कार्यक्रम आसानी से नहीं बना करते... पासपोर्ट, वीजा बनवाने की प्रक्रिया सरल नहीं होती, इस सबमें कोई अड़चन न आये इसके लिये मेरे बहनोई पंकज जी ने हमारे लिये डाक्यूमेंट भेज दिये थे... बहन प्रभा भी माँ के आपरेशन के समय आई थी पर वह मुझसे हफ्ते भर पूर्व ही अपने कार्यक्रम के मुताबिक चली गई थी ।

अमेरिका बहुत बड़ा देश है जैसे भारत को कुछ दिनों में घूमना असंभव है वैसे ही पूरे अमेरिका को भी कुछ दिनों में घूमना असंभव है... वैसे भी हमने पैकेज टूर नहीं लिया था... शिकागो में मेरी छोटी बहन और बहनोई प्रभा और पंकजजी रहते हैं उनसे मिलना ही हमारा मुख्य उद्देश्य था, इसके अतिरिक्त फ्लोरिडा में हमारे घनिष्ट मित्र श्री हरिबंधु महापात्रा

की पुत्री संगीता (पिंकी) रहती है, उसे जब हमारे आने के कार्यक्रम का पता चला तो उसने हमसे फ्लोरिडा आने का अत्यंत आग्रह किया अतः हमारे घूमने के कार्यक्रम में यह दो स्थान तो सम्मिलित थे ही... सच तो यह है हमारे घूमने की भी सारी योजना इन दोनों ने ही मिलकर बनाई थी... हमारे महीने भर के ट्रिप में शिकागो के अतिरिक्त वाशिंगटन, न्यूयार्क, नियाग्राफाल तथा फ्लोरिडा में डिज्नीवर्ल्ड तथा नासा जाने का कार्यक्रम था...।

हम जहाँ–जहाँ गये, सार्वजनिक स्थानों पर साफ सफाई के प्रति वहाँ के लोगों में अभूतपूर्व जागृति देखकर आश्चर्यचकित रह गये, शायद इसका कारण वहाँ लगता जुर्माना था पर धीरे–धीरे वह आदत में शुमार होता गया... इसके अतिरिक्त वहाँ की सड़कें तथा सड़कों पर दौड़ती गाड़ियाँ तथा लोगों का ट्रेफिक सेंस काबिले तारीफ था सच किसी भी देश की तस्वीर बदलने में साफ–सफाई, पक्की और चौड़ी सड़कों का बहुत बड़ा योगदान है पर यह तभी संभव है जब निवासियों में जागृति आये...।

यह भी सच है कि इंसान कहीं भी घूम आये, उसे विश्राम अपनी कुटिया में ही मिलता है... अपने विदेश भ्रमण के संस्मरणों के कुछ चित्र मेरे मन के कैनवास पर चित्रित हो गये हैं... उन चित्रों को आपके सम्मुख लेकर आ रही है मेरी लेखनी... इनके द्वारा आप न केवल वहाँ के परिवेश और वहाँ के लोगों के बारे में जान पायेंगे वरन् वहाँ के दर्शनीय स्थलों के बारे में भी कुछ जानकारियाँ प्राप्त कर पायेंगे... यद्यपि मैंने अपने अनुभव एवं जानकारी के अनुसार प्रत्येक घटना एवं स्थान का यथोचित वर्णन किया है पर यदि किसी स्थान के वर्णन में कोई त्रुटि या किसी की भावना को ठेस पहुँची हो तो क्षमाप्रार्थी हूँ ।

अंत में यही कहना चाहूँगी... जब जीवन में नीरसता, बोरियत प्रतीत होने लगे तो निकल पड़िये किसी मनमोहक स्थान की यात्रा पर, क्योंकि यात्रायें जीवन का वह संक्षिप्त मोड़ हैं जहाँ से हम कुछ लेकर ही आते हैं...

यात्रायें कुछ सिखा जाती हैं,
यात्रायें कुछ दिखा जाती हैं,
यात्रायें कुछ दे जाती हैं,

सुधा आदेश

अनुक्रमांक

1. कुछ चित्र मन के कैनवास से 9
2. शिकागो 14
2.1 मिलेनियम पार्क 20
2.2 बोट शो 22
2.3 बहाई टैम्पिल 27
3. वाशिंगटन डी.सी. 30
4. न्यूयार्क 38
4.1 स्टैचू ऑफ लिबर्टी 40
4.2 एलिस आइसलैंड 47
4.3 मैडम तुसाड म्यूजियम 55
4.4 टाइम स्क्वेयर 57
4.5 वर्ड ट्रेड सेंटर मेगोरियल 59
4.6 एंपायर स्टेट बिल्डिंग 61
5. ओरलैंडो 66
5.1 डिज्नीवर्ल्ड .....
..... 68
5.1.1 एपकॉट .....
..... 69
5.1.2 हॉलीवुड स्टूडियो 73
5.2 सी वर्ल्ड 75
6. नासा 79
5.3 लेक मेरी 85
7. एक बार फिर शिकागो 87
7.1 सियर्स टावर / विलीस टावर 90
7.2 नेवी पियर 93
7.3 फील्ड म्यूजियम आफ नेचुरल हिस्ट्री 96
7.4 स्वागीनारायण मंदिर 98